NEERAJ®

M.E.S. - 11

शिक्षा को समझना

(Understanding Education)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Hemant Kumar

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

शिक्षा को समझना

(Understanding Education)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1

Question Paper—June, 2019 (Solved) 1

Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2

Question Paper—June, 2017 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

शिक्षा क्या है? (What is Education?)

1. शिक्षा : समाज के क्रियात्मक पक्ष के रूप में 1
(Education as a Operational Aspect of Society)

2. शिक्षा : एक सोद्देश्य और सतत प्रक्रिया 14
(Education: A Purposive and Continuous Process)

3. अधिगम एवं विद्यालयी अधिगम से शिक्षा का विभेदीकरण 26
(Differentiating Education from Learning and Schooling)

4. शिक्षा एक संस्थागत नेटवर्क के रूप में (Education as a Institutional Network) 41

शिक्षा : प्रमुख आधार (Education: Its Bases)

5. सामाजिक-दार्शनिक आधार (Socio-Philosophical Bases) 51

6. शिक्षा : कुछ महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक विकास 65
(Education: Some Significant Historical Developments)

7. शिक्षा समर्थन की आवश्यकता (Education Supports Required) 90

8. सामुदायिक भागीदारी तथा शिक्षा समर्थन 96
(Community Participation and Support in Education)

शिक्षा तथा सामाजिक-राजनीतिक उच्च-व्यवस्था

(Education and Socio-Political Supra-System)

9. शैक्षिक लक्ष्य : सामाजिक-राजनीतिक विचारधारा के परावर्तक के रूप में 104
(Educational Goals as Reflective of Socio-Political Ideology of the Society)

10. शिक्षा के अनिवार्य समर्थन एवं अपरिहार्य अवरोधकों के रूप में राजनैतिक बल 113
(Political Forces as Necessary supports and Inevitable
constraints to Education)

11. शैक्षिक संचालन एवं राजनीतिक निर्णय निर्माण 124
(Educational Operations and Political Decision Making)

12. शिक्षा : इसके आयाम (Educations : Its Dimensions) 133

13. शिक्षा : ज्ञान पीढ़ी (Education: Knowledge Generation) 139

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

शिक्षा को समझना

(Understanding Education)

M.E.S.-11

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम भारिता : 70%*

नोट : *सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों की भारिता समान है।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए–

शिक्षा की अवधारणा की व्याख्या कीजिए। यह अधिगम और विद्यालयी शिक्षा (स्कूलिंग) से किस प्रकार भिन्न है, परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-26, 'अवधारणाएं एवं परिभाषाएं', पृष्ठ-33, 'शिक्षा तथा स्कूलन/विद्यालय अधिगम'

अथवा

वैदिक और उत्तर-वैदिक शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में प्राचीन भारतीय शिक्षा की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं की परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-65, 'प्राचीन भारतीय शिक्षा'

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए–

शिक्षा और राजनीति के मध्य सम्बन्ध की उपयुक्त उदाहरणों द्वारा परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-110, 'शिक्षा और राजनीति', पृष्ठ-111, प्रश्न-4 तथा पृष्ठ-112, प्रश्न-2 तथा प्रश्न-3

अथवा

सत्य की अवधारणा की व्याख्या कीजिए और सत्य के विभिन्न सिद्धान्तों की परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-140, 'सत्य का अर्थ एवं सिद्धान्त'

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्ही चार पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) सामाजिक परिवर्तन और शिक्षा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, 'सामाजिक परिवर्तन और शिक्षा

(ख) व्यक्ति और शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य के मध्य संश्लेषण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-16, 'शिक्षा के वैयक्तिक एवं सामाजिक उद्देश्यों का समन्वय'

(ग) साथ-साथ जीने के लिए शिक्षा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-21, प्रश्न-1

(घ) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए विविध स्तरों पर सफल संसाधन उपयोग

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-93, 'संसाधनों का कुशलतम उपयोग' तथा पृष्ठ-97, प्रश्न-3

(ङ) अधिगम समाज की अवधारणा और उदीयमान भारतीय समाज के साथ इसके सम्बन्ध

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-32, 'अधिगम समाज तथा अधिगम'

(च) शिक्षा के लिए संवैधानिक प्रावधान

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-114, 'शिक्षा हेतु संवैधानिक प्रावधान'

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए–

शैक्षिक विकास में समुदाय-सहभागिता का उपयुक्त उदाहरणों द्वारा समीक्षात्मक विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-98, 'शिक्षा के विकास में सामुदायिक भागीदारी', पृष्ठ-99, 'उपलब्ध संसाधनों का उपयोग', 'वर्तमान पाठ्यक्रम एवं अधिगम सामग्री का विकास'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

शिक्षा को समझना

(Understanding Education)

M.E.S.-11

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम भारिता : 70%*

नोट : *सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों की भारिता समान है।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए–

भारतीय शिक्षा पर राजनीतिक व्यवस्था के प्रभाव की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-8, 'भारतीय शिक्षा पर राजनीतिक प्रणाली का प्रभाव'

अथवा

शिक्षा के विविध सामाजिक उद्देश्यों की परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-15, 'शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य', 'पृष्ठ-16, 'शिक्षा के वैयक्तिक एवं सामाजिक उद्देश्यों का समन्वय'

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए–

संस्कृति की प्रकृति की व्याख्या कीजिए। संस्कृति के एक महत्त्वपूर्ण उपकरण के रूप में शिक्षा एक प्रकार अपनी भूमिका निभा सकती है? परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-52, 'संस्कृति एवं शिक्षा'

अथवा

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए मानव संसाधनों के महत्त्व की परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-90, 'परिचय', पृष्ठ-92, 'मानव संसाधन'

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) आर्थिक लाभ के लिए एक निवेश के रूप में शिक्षा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-66, 'शिक्षा और आर्थिक विकास', अध्याय-12, पृष्ठ-134, 'शिक्षा : आर्थिक लाभ हेतु निवेश'

(ख) ज्ञान का अनुभववादी (इम्पिरिसिस्ट) दृष्टिकोण।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-139, 'ज्ञान का आनुभविक दृष्टिकोण', 'आवश्यक ज्ञान एवं सिन्थेटिक'

(ग) सत्य का परिणामवादी/व्यावहारिकतावादी सिद्धांत।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-142, 'व्यवहारवादी आलोचना'

(घ) शिक्षा में साम्य (इक्विटी) और समानता (इक्विलिटी)।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-115, 'समानता एवं भागीदारी'

(ङ) शिक्षक-शिक्षा महाविद्यालयों (सी.टी.ई.) के प्रकार्य।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-128, 'अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय'

(च) बौद्ध शिक्षा प्रणाली की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-69, 'बौद्ध शिक्षा प्रणाली'

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए–

भारतीय संदर्भ में प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण का समीक्षात्मक विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-118, 'प्रारंभिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

शिक्षा को समझना
(UNDERSTANDING EDUCATION)

शिक्षा क्या है?
(What is Education?)

शिक्षा : समाज के क्रियात्मक पक्ष के रूप में
(Education as a Operational Aspect of Society)

1

परिचय

शिक्षा का अर्थ पदार्थ का ज्ञान, आत्म कल्याण तथा पर-कल्याण में प्रवृत्त करने वाला ज्ञान है। शिक्षा का अर्थज्ञान का वितरण है, ऐसा ज्ञान जो परंपरागत रूप से तथा अनुभव के रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानांतरित होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा समाज को संगठित एवं सामाजिक प्रणाली की स्थापना के साधन के रूप में आधुनिक काल में समग्र विकास का द्योतक बन गया है। शिक्षा द्वारा अब ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न संकल्पनाओं के साथ-साथ व्यावसायिक रूप से भी समाज को सशक्त बनाया जाता है। अतः शिक्षा समाज एवं राष्ट्र के विकास में अहम भूमिका निभाती है।

शिक्षा शब्द लैटिन शब्द 'एडुकेयर' से निर्मित है जिसका अर्थ है–पढ़ना-लिखना, विकास करना, आगे बढ़ना आदि। शिक्षा का उद्देश्य बहुआयामी परिदृश्य के रूप में है। साथ ही इसका मूल उद्देश्य समाज का नैतिक, बौद्धिक एवं अध्यात्मिक विकास करना है। 19वीं शताब्दी में उभरी इस संकल्पना ने शिक्षा के मूल उद्देश्यों के साथ-साथ शिक्षा के महत्त्व को भी संवर्द्धित किया अर्थात विद्यालय ही समाज के लिए बेहतर नागरिक तैयार करता है जो राष्ट्र की उन्नति में भी सहायक होते हैं।

अतः शिक्षा की समाज और राष्ट्र के कल्याण में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा एक ऐसी क्रिया है जो समाज में प्रत्येक व्यक्ति को उद्देश्यपूर्ण जीवनयापन की संप्राप्ति में सहायता करती है। सामाजिक उपव्यवस्था के रूप में तथा सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में शिक्षा का ढांचा जटिल बन गया है। इस संदर्भ में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज के सदस्यों को समाज के निरंतर परिवर्तित पहलुओं को अपनाने में सहायता करती है। वर्तमान में शैक्षिक समाजशास्त्रीय विश्लेषण के द्वारा सिद्ध किया गया कि शिक्षा समाज का अनिवार्य अंग है जो समाज के विभिन्न कार्यों के संचालन में मुख्य भूमिका निभाती है। शिक्षा द्वारा समाज की संरचना को मजबूती प्रदान की जाती है तथा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। यदि किसी समाज के आदर्श किसी कारण से बदल जाते हैं तो वहां की शिक्षा भी बदले आदर्शों के अनुसार तुरंत बदल जाती है। साथ ही इन आदर्शों की प्रगति के साधन के रूप में शिक्षा एक उपक्रम के रूप में कार्य करती है।

शिक्षा द्वारा समाज में राजनैतिक एवं तकनीकी विकास को प्रतिस्थापित किया जाता है। इतिहास, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान एवं धर्मग्रंथों द्वारा ज्ञान का प्रचार होता है और समाज अपने प्राचीन संसाधनों एवं प्रयोगों को नवीन रूप में परिवर्द्धित कर समुचित विकास करता है। शिक्षा एवं समाज शिक्षा को परस्पर प्रभावित करते हैं। व्यक्ति अपने संपूर्ण अनुभवों को आगामी पीढ़ी को प्रदान करता है। अतः शिक्षा की सामाजिक नियंत्रण एवं शक्ति संरचनाओं के रखरखाव में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। आधुनिक युग में औद्योगिकीकरण एवं पूंजीवादी व्यवस्था ने जनशिक्षा का समर्थन किया है, जिससे उद्योगों के लिए कार्मिक उपलब्ध हो सकें, किंतु धीरे-धीरे शिक्षा को मानव के कल्याण के लिए समझा जाने लगा और शिक्षा की भूमिका समाज के निर्माण में महत्त्वपूर्ण हो उठी।

इस अध्याय में शिक्षा और समाज के संबंधों के विविध पक्षों की चर्चा की गई है। शिक्षा एक सामाजिक उपव्यवस्था के रूप में, सामाजिक व्यवस्था की संकल्पना, समाज के संचालन में शिक्षा का महत्त्व आदि की चर्चा की गई है।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अध्याय का विहंगावलोकन

शिक्षा एक सामाजिक उप-व्यवस्था के रूप में
(Education as a Social Sub-system)

शिक्षा समाज की एक उपव्यवस्था है और सामाजिक संगठन में इसका पर्याप्त महत्त्व है। शिक्षा परिवार के पश्चात विद्यालय द्वारा दी जाने वाली प्राथमिक संस्था है। समाज में बच्चों के लिंग, परिवार, वातावरण, वर्ग, जाति एवं वंश आदि के आधार पर भिन्नता प्रकट की जाती है, जिसका प्रभाव विद्यालय में शैक्षिक पाठ्यचर्या में स्पष्ट दिखाई पड़ता है। अत: शिक्षा की प्रक्रिया तथा समाजीकरण का अंत:संबंध महत्त्वपूर्ण है। समाज में रहन-सहन एवं व्यवहार के द्वारा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। इसका प्रभाव विद्यालय में अध्ययन की प्रक्रिया में विभेदकारी रूप में पड़ता है। अत: बालकों द्वारा जिस समाजीकरण की प्रक्रिया एवं प्रभाव का विद्यालय में प्रवेश होता है, उसका निश्चित रूप से उनकी शिक्षा, कार्यों, प्रदर्शनों तथा उपलब्धियों पर प्रभाव पड़ता है।

समाज : एक व्यवस्था के रूप में–मानव सभ्यता कुछ संस्थाओं से मिलकर बनती है। संस्था चाहे औपचारिक हो या अनौपचारिक, यह एक परस्पर संबंधित जटिल तंत्र है। यह तंत्र मनुष्यों, सामाजिक सुविधाओं या साधनों से संबंधित मनुष्य के कार्यकलापों का संचालन करता है। भारतीय समाज की एक विशेष व्यवस्था है। इस विशिष्ट व्यवस्था में संस्थाएं कुछ सीमा तक एक-दूसरे पर निर्भर हैं। संस्था एक ऐसा संगठन होता है जिसका विशिष्ट लक्ष्य एवं उद्देश्य होता है। समाज एक व्यवस्था है जिसके अंतर्गत विविध संगठन होते हैं जो विभिन्न कार्यों का संचालन करते हैं। विद्यालय समाज की एक उपव्यवस्था है जो शैक्षिक कार्यों को संपादित करती है तथा बच्चों के भविष्य निर्माण के प्रति अग्रसर करती है। व्यवस्था के अंतर्गत विचार, आदर्श, उद्देश्य, समायोजन, कर्त्तव्य, कार्य आदि उत्पादक तत्त्व होते हैं जो संस्था को जीवंतता प्रदान करते हैं। अत: मानव जीवन को सरल, सहज और विकासोन्मुख बनाने में संगठनों की भूमिका अपरिहार्य है।

सामाजिक व्यवस्था का अभिप्राय शिक्षा की आंतरिक प्रक्रियाओं एवं संगठन से भिन्न सुसंगठित इकाई से है। समाज एक ऐसी व्यवस्थित इकाई है जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास हेतु कटिबद्ध होती है। मानव के परिप्रेक्ष्य में यह कहना अनुचित न होगा कि यदि संगठन की क्षमता न होती तो मानव आज भी पशु समान होता एवं अपनी विकास की अवस्था को प्राप्त नहीं कर पाता, साथ ही पारिस्थितिकीय परिवर्तन में अपना अस्तित्व खो देता। कहने का तात्पर्य है कि समाज एक ऐसी संगठन अथवा व्यवस्था है जो मानव निर्मित होकर भी मानव जीवन को विविध प्रकार से संचालित करती है। इस व्यवस्था के अनेक घटक हैं, जो निम्नलिखित हैं–

(क) परिवार व बंधुत्व–परिवार समाज की प्राथमिक इकाई है जो संगठन एवं व्यवस्था के रूप में मानव को प्रथम शिक्षा प्रदान करता है। हमारे देश में परिवार को सदा से ही आदर दिया गया है। परिवार कुछ आवश्यक सामाजिक उत्तरदायित्व निभाता है जैसे-बच्चों की देखभाल एवं उनका समाजीकरण तथा वयस्कों के जीवन व व्यक्तित्व का उचित मार्गदर्शन व एकीकरण।

(ख) आर्थिक व्यवस्था–सामाजिक व्यवस्था की जीवंतता तथा अखंडता का निहितार्थ समाज द्वारा अथवा इस संगठन द्वारा व्यक्ति की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। समाज का कार्य व्यक्ति की आर्थिक आवश्यकताओं को विभिन्न रूपों में नियोजित करना है।

(ग) सामुदायिक सांगठनिक व्यवस्था–समाज मूलत: व्यक्तियों की सांगठनिक इकाई है, जिसमें समूह और सहयोग के द्वारा सभ्यताओं का संरक्षण होता है। मानव आदिकाल से ही अपनी सामूहिक संरचनात्मक योग्यता के कारण विकास की सीढ़ियां चढ़ता रहा है और आज अत्याधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण है।

भारतीय समाज के परंपरागत समूह के अंतर्गत भी कई समूह आते हैं जो आधुनिक युग में परिवर्तित होकर युगानुकूल होते गए। सामाजिक समूह, जाति, व्यावसायिक समूह, धार्मिक संगठन तथा अन्य सामाजिक संगठन। अत: समाज एक जटिल मानवीय व्यवस्था है जो मूलत: मानवीय क्रियाकलापों का स्वरूप निर्धारित करती है तथा मानव के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है।

शिक्षा : सामाजिक उप-व्यवस्था के रूप में–शिक्षा समाज का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रकार्य है। शिक्षा एक व्यावहारिक, नैतिक एवं संज्ञानात्मक ज्ञान प्रदान करने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्यताओं का विकास है जिनके द्वारा वह समाज को नियंत्रण करने की क्षमता प्राप्त करता है, साथ ही अपनी संभावनाओं को भी पूर्ण करता है। शिक्षा का अर्थ मात्र सूचनाएं प्रदान करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण विकास से है अर्थात शिक्षा वह प्रक्रिया है जिनके अंतर्गत बालक अपने आंतरिक गुणों की अभिव्यक्ति करता है।

शिक्षा अपने व्यापक उद्देश्यों के रूप में समाज की एक प्रधान व्यवस्था है। शिक्षा समाज के विविध कार्यों के संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसका प्रभाव राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक रूप से पड़ता है। समाज में शिक्षा की सशक्त संरचना उसके विभिन्न घटकों द्वारा देखी जा सकती है। इसके तंत्र के प्रमुख घटक हैं–शिक्षा मंत्रालय, शिक्षा बोर्ड, शिक्षक संघ, अभिभावक

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

संघ, विश्वविद्यालय, विद्यालय, राष्ट्रीय संस्था, उदाहरणस्वरूप, यू. जी.सी, इग्नू तथा एन.सी.ई.आर.टी. आदि। इस प्रकार शिक्षा एक सुसंगठित एवं स्वायत्त इकाई है जो राष्ट्र निर्माण की शक्ति रखती है।

शिक्षा का उद्देश्य सदैव मानव का सर्वांगीण विकास रहा है। साथ ही इसके सभी घटकों का तात्कालिक उद्देश्य भिन्न होता है किंतु उनका सम्मिलित उद्देश्य एक ही है–राष्ट्र निर्माण। शिक्षा एक ऐसी प्रणाली है जो राजनैतिक तथा पारिवारिक प्रणाली की भांति कार्य करती है। शिक्षा और समाज दोनों एक-दूसरे से अंतर्संबंधित है। दोनों ही एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं तथा दोनों के ही हित आपस में जुड़े हुए हैं। शिक्षा के बिना हम कैसे एक आदर्श समाज की परिकल्पना कर सकते हैं और समाज के बिना हम कैसे शिक्षा प्रणाली को व्यवस्थित कर सकते हैं? शिक्षा से व्यक्तियों के व्यवहार, जीवन को व्यवस्थित करने के तरीकों के साथ-साथ सामाजिक संरचना को समझा जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि शिक्षा समाज की प्रतिनिधि है जो समाज को समझने एवं उसके संचालन में मदद करती है।

सामाजिक उपव्यवस्था के रूप में शिक्षा की विशेषताएं– शिक्षा समाज निर्माण में अपनी भूमिका के रूप में निर्विवाद रूप से कार्यरत रहती है। एक व्यक्ति के चरित्र निर्माण से लेकर, तार्किक ज्ञान, सूचना आदि से समाज को प्रभावित करती है।

(i) शिक्षा सामाजिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण और प्रसारण करती है। पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को सामाजिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित कराया जाता है। साथ ही संविधान के नियमों, विनियमों तथा मौलिक अधिकारों एवं कर्त्तव्यों का बोध शिक्षा के माध्यम से ही कराया जाता है। NPE–1986 के अंतर्गत नागरिकों को उत्पादक व्यक्ति बनाने के लिए विशेष प्रयास किया गया है अर्थात प्रत्येक नागरिक को शिक्षा द्वारा उसकी क्षमता का प्रयोग करने की सुविधा प्रदान की गई है।

(ii) शिक्षा नागरिकों के सभी अधिकारों एवं कर्त्तव्यों का बोध करवाती है जिससे राजनैतिक रूप से नेतृत्व करने की क्षमता का विकास होता है तथा भविष्य में नागरिक समाज का नेतृत्व सुदृढ़ होता है।

(iii) व्यक्ति में कौशल का विकास होता है जिससे आर्थिक समृद्धि में सहयोग प्राप्त होता है। साक्षरता के कारण व्यवसाय में तीव्र गति से उन्नति हुई है और कुशल कार्मिकों के द्वारा उत्पादन में गुणवत्ता आई है।

(iv) सामाजिक नियंत्रण एवं सामाजिक परिवर्तन तथा सुधारों में शिक्षा की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। शिक्षा के माध्यम से कानूनी एवं गैर-कानूनी कार्यों में फर्क समझ आता है तथा जीवन का उद्देश्य एवं जीने की सही कला के द्वारा व्यक्ति संपूर्ण जीवन का अधिकतम आनंद प्राप्त करता है।

(v) शिक्षा समाजीकरण की प्रक्रिया है। व्यक्ति को समाज का हिस्सा बनाने वाली तथा समाज को व्यवस्थित रखने में समुचित प्रयास करने को प्रेरित करने वाला पक्ष है।

शिक्षा : समाज के परिचालनात्मक पहलू के रूप में

शिक्षा के प्रकार्य– शिक्षा के अर्थ, कार्य तथा उद्देश्यों में इतना घनिष्ठ संबंध है कि इन तीनों के बीच विभाजन रेखा खींचना सरल कार्य नहीं है। शिक्षा का कार्यक्षेत्र अत्यंत व्यापक है। इसके अंतर्गत वे सभी बातें आ जाती हैं जो व्यक्ति को प्रभावित करते हुए उसे योग्य बनाती हैं कि वह अपने जीवन तथा समाज के लिए उचित कार्यों को उचित समय पर कर सके। ये उचित कार्य देशकाल तथा परिस्थितियों के अनुरूप बदलते रहते हैं। इन्हें स्थायी रूप से निश्चित नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि शिक्षा के कार्यों के विषय में विद्वानों में भी मतभेद रहा है। डेनियल वेबस्टर के शब्दों में–"शिक्षा का कार्य भावनाओं को, अनुशासित आवेगों को नियंत्रित, प्रेरणाओं को उत्तेजित तथा धार्मिक भावनाओं को विकसित करना है।"

जॉन डिवी के शब्दों में "शिक्षा का कार्य असहाय प्राणी के विकास में सहायता पहुंचाना है, जिससे वह सुखी, नैतिक तथा कुशल मानव बन सके।"

ब्राउन के अनुसार, शिक्षा चैतन्य रूप में एक नियंत्रित प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाए जाते हैं।"

प्रसिद्ध समाजशास्त्री जॉर्ज पेनी (George Pane) के अनुसार शिक्षा के तीन कार्य निम्नलिखित हैं–

(क) परम्पराओं का आत्मीकरण (Assimilation of Traditions)

(ख) नवीन सामाजिक ढांचे का विकास (Development of New Social Pattern)

(ग) रचनात्मक तथा सर्जनात्मक कार्य (Constructive and Creative Role)

इसी तरह इमाइल दुर्खीम (Emile Durkhiem), फ्रेंज बॉअज (Franz Boaz) आदि विद्वानों ने भी शिक्षा के कार्यों को परिभाषित एवं वर्गीकृत किया है। इमाइल दुर्खीम के अनुसार,

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(i) इसके द्वारा संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानातरण होता है।

(ii) सांस्कृतिक परंपरा में नवीन ज्ञान द्वारा परिवर्तन आता है।

मुनरो की सामाजिकतावादी प्रवृत्ति के अनुसार शिक्षा के अनेक कार्य हैं, परन्तु ने अपनी पुस्तक 'ब्रीफ कोर्स इन दी हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन (Brief Course in the History of Education) में शिक्षा के निम्नलिखित चार प्रमुख कार्यों पर प्रकाश डाला है–

(क) ज्ञान का प्रसार (Diffusion of Knowledge)–शिक्षा का प्रथम कार्य व्यक्ति को सामाजिक क्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए तैयार करना है जिससे व्यक्ति तथा समाज दोनों की उन्नति हो सके। परन्तु व्यक्ति तथा समाज की उन्नति बुद्धि पर निर्भर करती है, जो केवल ज्ञान के द्वारा ही विकसित हो सकती है। अत: शिक्षा का कार्य ज्ञान का प्रसार करना है जिससे व्यक्ति बुद्धिमान बन सके तथा सुयोग्य नागरिक के रूप में समाज की उन्नति में सहयोग प्रदान कर सके।

(ख) शिक्षा सामाजिक नियन्त्रण के रूप में (Education as a Means of Social Control)–बुद्धिमान नागरिकों को तैयार करने के अतिरिक्त शिक्षा सामाजिक नियन्त्रण करने का भी एक मुख्य साधन है। उचित शिक्षा की व्यवस्था होने पर बालकों में नैतिक चेतना तथा आत्म-अनुशासन की भावनाएँ विकसित की जा सकती हैं। इससे वे समाज की सेवा करते हुए प्रत्येक चुनौती का डटकर मुक़ाबला कर सकेंगे। अत: सामाजिक नियन्त्रण का कार्य शिक्षा के द्वारा सुचारु रूप से किया जाना शिक्षा का दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य है।

(ग) सामाजिक परम्परा की सुरक्षा तथा हस्तान्तरण (Security and Transmission of Social Heritage)–शिक्षा का तीसरा कार्य सामाजिक परम्परा अर्थात् संस्कृति तथा सभ्यता की रक्षा करना तथा उसको भावी संतति को हस्तान्तरित करना है। ऐसा न करने से न तो सामाजिक परम्परा को प्राप्त किया जा सकता है और न ही उसे अपने निजी योगदान के साथ भावी संतति को हस्तान्तरित किया जा सकेगा। इससे व्यक्ति अपने वातावरण से अनुकूलन करने में असमर्थ हो जायेगा तथा समाज भी अवनति की ओर अग्रसर हो जायेगा।

(घ) सामाजिक विकास (Social Progress)–शिक्षा का चौथा कार्य समाज का विकास करना है। इसका एकमात्र कारण यह है कि व्यक्ति का विकास केवल सुव्यवस्थित तथा उन्नतिशील समाज में ही हो सकता है। हमारे देश भारत में शिक्षा का यह सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। इसका कारण यह है कि जबसे हमने स्वतन्त्रता प्राप्त की है उस समय से पुरानी रूढ़ियों को अनावश्यक समझा जाने लगा। परिणामस्वरूप इन रूढ़ियों पर आधारित हमारा सम्पूर्ण ढाँचा अब अपूर्ण ही नहीं अपितु असंगत भी है। इस दृष्टि से हमें अब बदलते हुए सामाजिक जीवन हेतु ऐसे सामाजिक ढाँचे की आवश्यकता है जो वर्तमान माँगों को पूरा कर सके।

सामाजिक परिवर्तन और शिक्षा–सामाजिक का अर्थ समाज सम्बन्धी तथा परिवर्तन का तात्पर्य पहले की स्थिति से भिन्नता अथवा नवीनता है। अत: सामाजिक परिवर्तन का अर्थ है समाज में होने वाला बहुआयामी बदलाव।

सर जोन्स के अनुसार, "सामाजिक परिवर्तन वह शब्द है जो सामाजिक प्रक्रियाओं तथा सामाजिक संगठन के किसी अंग में अंतर अथवा रूपांतर को वर्णन करने के लिए प्रयोग किया जाता है।" (Social change is a term used to describe variation in or modification of any aspects of social processes, social interaction or social organization.)

गिलिन तथा गिलिन के अनुसार, "सामाजिक परिवर्तन जीवन की मानी हुई रीतियों में होने वाले परिवर्तन को कहते हैं। चाहे ये परिवर्तन भौगोलिक दशाओं के परिवर्तन हों अथवा संस्कृति साधनों में अथवा जनसंख्या की रचना या सिद्धांतों के परिवर्तन में अथवा प्रसार से अथवा समूह के अंदर ही आविष्कारों के फलस्वरूप ही हुए हों।"

जो समाज स्वयं को बदलना अथवा आधुनिक बनाना चाहता है उसे अपने उपकरणों, संस्थाओं, अभिकरणों का प्रयोग करना चाहिए। शिक्षा समाज का प्रधान अभिकरण है। इसके द्वारा परिवर्तन सर्वाधिक रूप में प्रभावित होता है। शिक्षा कौशलों और व्यवसायों का आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करती है और इस प्रकार आधुनिक उद्योगों, व्यापार, शिक्षण और शोध संस्थाओं तथा अन्य संस्थाओं में विभिन्न प्रकार की विशिष्ट नौकरियों के लिए आवश्यक दक्षता से युक्त कर्मचारी प्रदान करती है। इतना ही नहीं शिक्षा से यह अपेक्षा भी है कि वह लोगों के मूल्यों और अभिवृत्तियों में बदलाव लाए। इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण में शिक्षा की महती भूमिका है। विकासशील देशों में नेताओं और योजना निर्माताओं ने अपने लोगों को शैक्षिक सुविधाएं प्रदान करने के लिए बड़े पैमाने पर प्रावधान किए हैं। भारत में हमने देखा है कि पिछले 50 सालों की राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजनाओं में हमारे शैक्षिक योजनाकारों ने सभी स्तरों पर देश के सभी स्रोतों तक शैक्षिक सुविधाएं पहुंचाने का बहुत प्रयास किया है।

शिक्षा समाज की सांस्कृतिक विरासत में मध्यस्थ के रूप में कार्य करती है तथा इसे बनाए रखने का कार्य करती है, किन्तु संरक्षण करने का प्रयास करते समय, शिक्षा को यह भी सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि समाज में संस्कृति संबंधी पिछड़ेपन को

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com